ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 126-128
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

डिहरी–डालमिया नगर शहर की सामाजिक–आर्थिक समस्याएँ

संजय कुमार
एम0 ए0, पी–एच0 डी0 समाजशास्त्र, ग्राम – रामपुर, पो0 – पेनार, रोहतास (बिहार), भारत

Received- 22.08.2020, Revised- 26.08.2020, Accepted - 29.08.2020 E-mail: - dr.ramanyadav@gmail.com

सारांश : *नगरों के विकास के साथ–साथ समस्याएँ भी अपने आप पनपने लगती है। जब नगर बड़े आकार के हो जाते हैं, तब वे समस्याएँ मुखर हो उठती हैं और भयंकर रूप धारण कर लेती है। इस संदर्भ में ममफोर्ड का कथन सत्य ही प्रतीत होता है कि "आधुनिक बड़ा नगर तकनीकी क्षेत्र में सांस्कृतिक पृथकत्व का अपूर्व उदाहरण प्रस्तुत करता है।" उन्होंने आगे बतलाया कि "वह नगर आर्थिक दृष्टि से अवांछनीय, राजनीतिक दृष्टि से अस्थिर, जैविक दृष्टि से पतन की ओर उन्मुख तथा सामाजिक दृष्टि से असंतोषजनक होता है।*

कुंजीभूत शब्द– विकास, समस्याएँ, आकार, भयंकर, आधुनिक, तकनीकी, सांस्कृतिक, पृथकत्व, अवांछनीय ।

विकसित देशों में बड़े आकार के नगरों का विकास रूक सा गया है। वहाँ केन्द्रापसारी शक्ति कार्य करती है, जिसके कारण नगर बाहर की ओर फैलते जाते हैं। जबकि भारत जैसे विकासशील देशों को, जहाँ नगरीय विकास अपनी प्रारम्भिक अवस्था में है, केन्द्राभिमुखी शक्ति कार्य करती है। यहाँ बाहर से लोग नगरों के केन्द्र में आकर रहना पसन्द करते हैं, क्योंकि वहाँ उनकी आवश्यकता की सारी वस्तुएँ, सुविधाएँ उपलब्ध होती है। फलतः नगर केन्द्र में व्यावसायिक प्रतिष्ठान विकसित होकर आवासीय क्षेत्रों को बाहर की ओर धकेलते जाते हैं। यहाँ नगर विकास के साथ–साथ निवास क्षेत्र व्यावसायिक क्षेत्रों को घेरते हुए नगर की सीमाओं को बढ़ाते जाते हैं। नगर की सीमाओं के विस्तार के बावजूद उसका ह्रदय स्थल दुर्बल हो जाता है। भारत ही नहीं विश्व के सभी नगरों में निम्नांकित सामान्य समस्याएँ पायी जाती है :–

1. जलापूर्ति की समस्या।
2. नगर की स्वच्छता की समस्या।
3. यातायात की समस्या।
4. अपेक्षित उपयोगी सुविधाओं के व्यवस्था की समस्या।
5. गन्दी बस्तियों का निर्माण।
6. बेरोजगारी की समस्या।
7. कारखानों में कार्य कर रहे कर्मचारियों का असंतोषजनक स्थिति।
8. स्वास्थ्य सेवाओं एवं आमोद–प्रमोद के साधनों की कमी।

समस्याओं के कारण– आधुनिक भारतीय नगरों की समस्याओं के प्रमुख काराण निम्नलिखित हैं

1. नगरा.ति एवं जनसंख्या घनत्व में वृद्धि।
2. ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक सुविधाओं के अभाव के कारण ग्रामीण लोगों का नगरीय क्षेत्रों की ओर आकर्षण।
3. नगरीय सुविधाओं का तेजी से विकास न किया जाना। आर्थिक साधनों की कमी। ...
5. नगरों की व्यवस्थित एवं सुनियोजित ढंग से न बसाया जाना।

नगराकृति एवं जनसंख्या घनत्व में वृद्धि– ज्ञातव्य है कि विगत वर्षों में बड़े आकार वाले नगरों की आ.ति में भारी वृद्धि हुई है। दिल्ली इसका अच्छा उदाहरण है। 1901 में यहाँ की जनसंख्या मात्र 2 लाख थी जो 1951, 1961, 1971, 1981 एवं 1991 में क्रमशः 4.5 लाख, 23.6 लाख, 36. 3 लाख, 55.7 लाख एवं 94 लाख तक पहुँच गई। कलकत्ता तथा मुम्बई ने भी अपना आकार इतना अधिक बढ़ा लिया है कि आये दिन दुर्घटनाएँ, ट्रैफिक नियंत्रण, पेयजल का अभाव, आवासीय संकट तथा रोजमर्रा एवं दैनिक उपयोग की सामग्रियों की कमी आदि समस्याएँ विकराल रूप धारण करती रहती है। इन नगरों में सामाजिक बंधन काफी शिथिल हो चुका है।

वस्तुतः नगरों एवं नगरीय जनसंख्या के असमान वितरण से भी समस्याएँ और अधिक जटिल हो गई है। यह समस्या भारत का ही नहीं, वरन् संयुक्त राज्य अमेरिका सृदश देशों में भी व्याप्त है। वहाँ की 75 प्रतिशत जनसंख्या मात्र 10 प्रतिशत भू–भाग पर निवास करती है तथा 25 प्रतिशत जनसंख्या वहाँ के केवल 90 प्रतिशत भू–भाग पर पाई जाती है। परिणामतः स्वाभाविक रूप में अनेकानेक समस्याएँ समक्ष है। नगरीय आकार व उसकी जनसंख्या में वृद्धि के कारण उत्पन्न प्रमुख समस्यायें निम्नलिखित हैं–

आवासीय समस्या एवं गंदी बस्तियों का प्रादुर्भाव– नगरों की मुख्य समस्याओं में आवासीय मकानों की कमी एवं गंदी बस्तियों का उदय प्रमुख समस्या है। इन समस्याओं का मुख्य रूप बड़े–बड़े औद्योगिक नगरों में देखने को

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

मिलता है जहाँ एक छोटे से कमरे में अनेक लोग इस रूप में रहते हैं कि उन्हें आवासीय मकान कहना असत्य सा लगता है। बम्बई में आज से 35 वर्ष पूर्व, जबकि वहाँ की जनसंख्या आज की अपेक्षा बहुत कम थी। एक छोटे से कमरे में 10–15 व्यक्ति रहा करते थे। भारत के अधिकांश नगरों में आवासीय समस्या जटिलतम होती जा रही है। एक राष्ट्रीय सर्वेक्षण के प्रतिवेदन के अनुसार नगरों में केवल 45 प्रतिशत मकान पक्के हैं। लगभग 77 प्रतिशत एक या दो कमरे के हैं बड़े नगरों में 80 प्रतिशत लोगों को स्नानागार एवं 90 प्रतिशत लोगों को शौचालय की सुविधा एकदम नहीं है।

उपर्युक्त कारणों से नगरों में गंदी बस्तियों का उदय हुआ है। वहाँ अधिवास गंदे, सघन एवं वायु–प्रकाश से हीन है। फलतः अनेकानेक रोग पनपते हैं, अभी हाल के एक सर्वेक्षण के अनुसार मुम्बई नगर में 10 प्रतिशत लोग गंदी बस्तियों में तथा 80 प्रतिशत लोग सड़कों पर रात गुजारते हैं। वास्तुशिल्पकार मनोहर ने बताया कि वर्तमान दिल्ली गंदी बस्तियों, अस्थाई व गंदी झोपड़ियों का नगर है। यहाँ इस प्रकार की लगभग 300 बस्तियाँ हैं। कलकत्ता में लगभग 70 प्रतिशत लोग घटिया किस्म के मकानों में रहते हैं। बंगलोर नगर में लगभग 3 लाख लोग 93 गंदी बस्तियों में गुजर–बसर कर रहे हैं। ऐसी ही हालत कमोवेश प्रत्येक नगर की है।

नगरीय सुविधाओं का अभाव– नगरीय जनसंख्या के घनत्व के बढ़ जाने से वहाँ नगरीय सुविधा–पानी, आवागमन के साधन, बिजली आदि की कमी पाई जाती है। भारत सरकार द्वारा नियुक्त 'पर्यावरणीय स्वास्थ्य समिति' के अनुसार 2 लाख से अधिक जनसंख्या वाले नगरों में प्रति व्यक्ति औसत 45 गैलन पानी पीने के लिए चाहिए किन्तु भारत के अधिकांश नगरों में इसकी मात्रा पूरी नहीं है। यह मात्रा बम्बई में 42 गैलन, लखनऊ में 32 गैलन, पूना में 32 गैलन, हैदराबाद में 30 गैलन, कानपुर व आगरा में 22, 22 तथा मैसूर, दिल्ली व चेन्नई में । क्रमशः 21, 20 एवं 17 गैलन पाया जाता है।

दैनिक उपभोग संबंधी सामग्रियों का अभाव– नगरों का आकार बढ़ जाने के कारण दैनिक उपभोग की आवश्यक आवश्यकता की वस्तुएँ उपलब्ध नहीं हो पाती। नगर के आस–पास के क्षेत्रों है से साग–सब्जी, दूध आदि को छोड़कर शेष सामग्रियों को दूरवर्ती क्षेत्रों से मंगाना पड़ता है, जिससे उनका मूल्य अधिक बढ़ जाता है।

स्वास्थ्य चिकित्सा सुविधाओं का अभाव– नगरों में बढ़ती हुई जनसंख्या वृद्धि, वायु, ध्वनि, जल प्रदूषण आदि के कारण वहाँ के निवासी सदैव रोगों की चपेट में रहते हैं। नगरों की गंदी बस्तियों में रहने वालों के स्वास्थ्य के बारे में कुछ कहना ही बेकार हैं वे मात्र ईश्वर के नाम पर जीवित है। नगरों में रहने वाले लोगों से भी अनेक प्रकार की गंदगी फैलती है। वे लोग अनियंत्रित रूप से मल–मूत्र का त्याग, कूड़ा–करकट आदि वस्तुएँ मन चाहे ढंग से फेंकते हैं, जिसका उनके स्वास्थ्य पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है।

मकानों के किराये की दर का ऊँचा होना– प्रसिद्ध जनसंख्या शास्त्री डॉ० बोस ने अपनी एक अध्ययन में बताया है कि दिल्ली की आवास योजना समाज विरोधी है। वहाँ की अच्छी–अच्छी कॉलोनियों में 35–40 प्रतिशत मकान रिक्त रहते हैं या तो उनके मालिक अपने कम किराये के मकान में रहकर उनहें अधिक दर पर किराये देते हैं। इस पर सरकार का कोई ध्यान नहीं है। मकानों के किरायों की स्थिति मध्यम तथा छोटे नगरों में और भी चिन्ताजनक है। छोटे–छोटे नगरों में, जिन्हें सरकार ने 1981 में नगर माना है, आवासीय संकट उत्पन्न हो गया है। इन नगरों में सरकारी कार्यालयों के अधिक खुलने, काला बाजारियों की होड़ आदि के कारण मध्यम वर्ग का व्यक्ति रहने को मकान नहीं पा सकता है, तो फिर निम्न वर्ग के लोगों की बात ही दूर है। सरकार ने हरिजन व जनजातियों के लिए कुछ बस्तियों नगर व ग्रामणी क्षेत्रों में बनाई है। परन्तु उन बस्तियों की स्थिति बहुत चिन्ताजनक है। उन बस्तियों में यदि हरिजन रहता है तो उसमें सुविधाएँ ही नहीं उपलब्ध हैं अन्यथा वे बस्तियाँ शहर के गुण्डों, बदमाशों के अड्डे बन चुकी है। इस समस्या पर सरकार का ध्यान अपेक्षित है। नगरों में छात्रावासों की कमी ही नहीं वरन् अनुपस्थिति पाई जाती है। बड़े–बड़े नगरों में जो छात्रावास हैं, वे छात्र संख्या के अनुपात में बहुत कम है। किन्हीं–किन्हीं नगरों में छात्रावासों की आवश्यकता ही नहीं महसूस की गई है। एक सरकारी योजना के तहत प्रत्येक जनपद में 'महिला हरिजन छात्रावास' बनवाया जा रहा है। यदि आप उन छात्रावासों की ओर ध्यान दें तो स्पष्ट होगा कि जनपद मुख्यालय के नगरों में कोई ऐसी हरिजन छात्रा अध्ययन नहीं करती जिसे छात्रावास में रहने की आवश्यकता हो। ऐसे छात्रावासों को लेकर अनेक अपराध बढ रहे हैं। सरकार को ऐसी योजनाओं की संभाव्यता व आवश्यकता पर अवश्य विचार करना चाहिए।

प्रशासकीय सुविधाओं का अभाव– जनसंख्या वद्धि के कारण नगर का स्वरूप बदलता जाता है। नगर के स्वरूप बदलने से नगर की सीमा बढ़ती जाती है उस सीमा में निवास करने वली जनसंख्या के लिए पानी, बिजली, प्रकाश, सड़क, शिक्षा आदि सुविधाएँ प्रदान करना प्रशासन

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

का उत्तरदायित्व होता है। इस उत्तदायित्व को वहन करने में नगर की बढ़ती हुई आ.ति बाधा उपस्थित करती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Bosh, Ashis (1973) : Studies in india's Ur banization, 1901-1971.
2. Bijlani, H.U. (1973) : Urban pro9bleme, In dians institute of Public Administration, New Delhi.
3. Queen and Thomas : The city, Random House, London.
4. Max-Weber (1958) : The city, the free press, New York.

*****

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*